आभार

ऋतुगेय राग एवं आधुनिक बंदिशों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन के संगीतमय सफर को उजागर करने वाली इस शैक्षणिक यात्रा की परिणति कृतज्ञता और प्रशंसा की गहरी भावना से चिह्नित है। यह प्रयास विभिन्न वर्गों के अटूट समर्थन, मार्गदर्शन और प्रेरणा के बिना संभव नहीं होता। अपनी हार्दिक स्वीकृति व्यक्त करते हुए, मैं उन लोगों द्वारा किए गए अपार योगदान के प्रति सचेत हूं जिन्होंने इस विद्वतापूर्ण खोज को आकार देने और पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सबसे पहले, मैं अपने सम्मानित मार्गदर्शक, डो. अश्विनिकुमार आर सिंग के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं, जिनकी अमूल्य सलाह इस पूरे शोध में मार्गदर्शक रही है। उनकी विद्वता, व्यावहारिक सुझाव और निरंतर प्रोत्साहन ने इस थीसिस की संरचना और सामग्री को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने गहन ज्ञान को साझा करने और मुझे इस गहन विश्लेषण के लिए आवश्यक बौद्धिक आधार प्रदान करने के लिए मैं उनका आभारी हूं।

मैं अपने पिता श्री श्यामकुमार उपाध्याय तथा माता श्रीमति कनकलता उपाध्याय को सदैव दंडवत करता हुं जीन्होंने सदा मैने जो चाहा वो ला कर सामने रख दीया, हर बात में प्रोत्साहित कर अंततः मदद कर सराहना की। पत्नी श्रीमति जितिक्षा उपाध्याय तथा पुत्र तिर्थ उपाध्याय का भी में आभारी हुं, जीन्होंने मेरे पीएचडी के कार्य अंतर्गत मेरी अनउपलब्धि का कभी गीला-शिकवा नहीं कीया और मेरे कार्य में साथ दीया। यह अटूट समर्थन और समझ ही मेरी शैक्षणिक यात्रा का आधार रही है। उनके प्रोत्साहन, बलिदान और मेरी क्षमताओं में विश्वास ने मुझे चुनौतियों से जूझने और इस शैक्षणिक माइलस्टोन तक पहुंचने की ताकत प्रदान की है। उनका बलिदान और प्रेम निरंतर प्रेरणा का स्रोत रहा है।

जीनके भजनों को में बचपन से सुनता आया हुं, जीन्होंने अनमोल साहित्यमय भजन लिख राग एवं तालबद्ध कर के जनसमुदाय को अर्पण कर दिये। वैसे मेरे मनमें संगीत के जनक

एवं आध्यात्मिक गुरु परम पूजनिय रंगअवधूत महाराजश्री को सदैव दंडवत हुं. संगीत के गुरु प्रो.द्वारकानाथ भोंसले जी, श्री भरत महंत जी तथा गायन विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश केलकर जी का भी हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ की जीनकी बदौलत संगीत के प्रति मुजमें प्रेम और गहन विचार के साथे संशोधन की जिज्ञासा जागृत हुइ। खास तौर पर मेरे संकाय अध्यक्ष प्रो. गौरांग भावसार जी का जिनकी प्रेरणा से ही मैने शोध कार्य की शरुआत की और जिन्होंने मेरे शैक्षणिक प्रवास के दौरान अप्रतिम मानसिक शक्ति प्रदान कि हैं। उनके मित्रभाव एवं सरलता के कारण बिना किसी अंतराल शोध कर पाया हुं।

मेरे मित्र जयदिप लकुम तथा धनंजय वेकरीया जो मेरी पीएचडी के अंत में सारथी बन कर आए और कम्प्युटर की विडंबना ओं को सरलता में परिवर्तित कर मेरे मानसिक संताप के विघ्न को हर के मुजे मकाम तक पहोंचाया। जो व्यक्तिगत रूप से भी मेरे साथी रहे हैं, मैं उनकी हार्दिक सराहना करता हूं। उनके सौहार्द, विचार-विमर्श और संगीत और विद्वतापूर्ण गतिविधियों के प्रति साझा उत्साह ने मेरे शैक्षणिक अनुभव में एक मूल्यवान आयाम जोड़ा है। उनके अटूट समर्थन और प्रोत्साहन ने यात्रा को और अधिक सुखद और संतुष्टिदायक बना दिया है।

मैं अपने साथी शोधकर्ताओं और सहकर्मियों के योगदान को स्वीकार करता हूं, जो अकादमिक चर्चा और सहयोगात्मक प्रयासों का हिस्सा रहे हैं। इस शोध की गहराई और चौड़ाई को बढ़ाने में विचारों का आदान-प्रदान, चर्चा और साझा संसाधन महत्वपूर्ण रहे हैं।

मैं अनुकूल शैक्षणिक बुनियादी ढांचा, संसाधन और वातावरण ही नहीं लेकिन संगीत का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करनेवाली मेरी आदरणीय, सन्माननिय तथा सदा दंडवतनिय फेकल्टी ओफ पर्फोर्मिंग आर्ट्स का आभारी हूं। पुस्तकालय सुविधाओं, अभिलेखीय सामग्री तक पहुंच और विद्वतापूर्ण माहौल ने इस थीसिस को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अंत में, यह थीसिस एक सामूहिक प्रयास है, और मैं प्रत्येक व्यक्ति और इकाई का अंतर से आभारी हूं जिन्होंने इस शैक्षणिक प्रयास को पूरा करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से

भूमिका निभाई है। उनके सामूहिक प्रभाव ने कथा को आकार दिया है, विश्लेषण को समृद्ध किया है।

आभार,

उपाध्याय राजा श्यामकुमार